IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

नई कहानी में टूटते जीवन मूल्य

डॉ. राजेश आरदवाड
सहयोगी प्राध्यापक
प्रमिलादेवी पाटील कला व विज्ञान महाविद्यालय, नेकनूर ता. जि . बीड

नए काहानीकारो ने भी प्राचीन मूल्य कि व्याप्ती को तोडते हुए नए स्वातंत्र्योत्तर भारत कि तस्वीर को नई कहानी का रूप दिया है। विरासत मे मिली विनता ने भारतीय आम जनता को तोडकर रख दिया। स्वतंत्रता के बाद विभाजन की त्रासदी को झेलना पडा है। उससे मनुष्य का धार्मिक मूल्य पर विश्वास उठता चला गया, मनुष्य धीरे धीरे अस्तित्ववादी बनता गया। प्राचीन कहानी जहां कथावस्तू के आसपास सिमटी होती थी तथा मुल्यानो का महत्त्व अंतिम चरण मे कायम रखती थी। अवसद मे कहानी का मुलकेंद्र आम मानव की चिंता को बना डाला तथा कहानी वस्तुस्थिती के आसपास केंद्रित होती गई । नई कहानी की विकास यात्रा बीसवी शताब्दी के छठे दशक से प्रारंभ हुआ। इनमे प्रकाशित होनेवली कहानीया परंपरागत कहानीयो से कुछ अलग दिखायी दी। इन कहानीयो में जीवन यथार्थ निरंतर तुटते सबंध, मुल्यो और मान्यताओ को अभिव्यक्त किया गया।

मुख्य शब्द : नई कहनी, जीवन मूल्य आवश्यकता , प्रकार

अनादि काल से साहित्यकार अपनी मन:श्चेतना से प्रेरित होकर सर्जना मी लीन रहा है। मन की सतह से उतरकर साहित्यकार की संवेदना युगीन रचनाविशेष का रूप धारण करती है। अत: साहित्य में युगीन सत्य का लेखा—जोखा निहित होता आया है। साहित्यकारो द्वारा अपने समय की सत्यता, देशकाल, वातावरण का लेखन का तत्कालीन समाज की प्रतिमा , प्रतिभा और संस्कुति का दिशा निर्देश किया जाता है।

नए काहानीकारो ने भी प्राचीन मूल्य कि व्याप्ती को तोडते हुए नए स्वातंत्र्योत्तर भारत कि तस्वीर को नई कहानी का रूप दिया है। विरासत मे मिली विनता ने भारतीय आम जनता को तोडकर रख दिया। स्वतंत्रता के बाद विभाजन की त्रासदी को झेलना पडा है। उससे मनुष्य का धार्मिक मूल्य पर विश्वास उठता चला गया, मनुष्य धीरे धीरे अस्तित्ववादी बनता गया। प्राचीन कहानी जहां कथावस्तू के आसपास सिमटी होती थी तथा मुल्यानो का महत्त्व अंतिम चरण मे कायम रखती थी। अवसद मे कहानी का मुलकेंद्र आम मानव की चिंता को बना डाला तथा कहानी वस्तुस्थिती के आसपास केंद्रित होती गई।

कहा जाता है कि 'समय' ब्रह्मांड का वैश्विक सत्य है, जो हर वक्त बदलता है और अपने बदलने कि कहानी छोड जाता है। कहानीकार इसी समय की मानवीय संवेदना को पकडकर सर्जना करता है। बदलाव का कारण और उत्तर भी देता है तथा समय बदलाव की संतुष्टी का रास्ता बताने का प्रयास किया है। उम्मीद यह है कि, कूछ शाश्वत मुल्यो की आवश्यकता का निर्वाह बना रहे, भारतीय संस्कुती की पहचान को बनाए रखे तथा समय इन मुल्यो का निर्वाह करता रहे।

प्रस्तुत प्रस्तुतीकरण मे नई कहानी में तुटते जीवन मूल्य इस विषयपर अपने मंतव्य के रूप में कहा जा सकता है कि विभक्त होकर विविध दिशा में बहनेवाली कहानी प्रगतीवादी विचारधारा को लेकर चली प्रगतीवादी युग की कहानी कहलायी। नामवर सिंह ने इसमें 'नई' शब्द जोडकर 'इसे नई कहानी' नाम से परिभाषित कर दिया। साठोत्तरी कहानी, अकहानी, सचेतन कहानी, सहज कहानी, समांतर कहानी, जनवादी कहानी, सक्रीय कहानी इत्यादी नामो से भी यह जानी गई।

"कहानी एक सूक्ष्मदर्शी यंत्र है,जिसके नीचे मानवीय अस्तित्व के दृश्य खुलते है। १९५० के बाद की कहानी शिल्प की दृष्टी से पूर्ववर्ती कहानी से भिन्न।" अज्ञेय

"अभी तो जो कहानी सिर्फ कथा कहती थी तो कोई चरित्र पेश करती थी, वही कहानी अब जीवन के प्रति एक नया भावबोध जगाती है।" नामवर सिंह

नई कहानी की विशेषता:

नई कहानी की विकास यात्रा बीसवी शताब्दी के छठे दशक से प्रारंभ हुआ। इनमे प्रकाशित होनेवली कहानीया परंपरागत कहानीयो से कुछ अलग दिखायी दी। इन कहानीयो में जीवन यथार्थ निरंतर तुटते सबंध, मुल्यो और मान्यताओ को अभिव्यक्त किया गया। यथार्थता की क्रूरता के निरंतर बढते दबाव, स्वाधीन भारत का क्रूर यथार्थ, स्वार्थी -व्यवस्था , न्याय , शासन सामाजिक विसंगतियॉ, विषमताएँ, असुरक्षा , बेकारी, अकेलापन इत्यादी कारण नई अत्याधिक उग्न और निर्गम होती दिखायी देती है।

नई कहानी की विशेषता: को तीन वर्षो में बाँटा जाता है।

१. नगरबोध की कहानी यथार्थ बोध भी कह सकते है।

२. यौन समस्याओं का चित्रण करनेवाली कहानी।

३. ग्रामीण अंचल की कहानियाँ

नगरबोध की कहानी

नगरबोध की कहानियो में सतही सहानुभूती, आंतरिक इर्ष्या, स्वार्थ परता, जीवन की कृत्रिमता इत्यादी अभिव्यक्ती हुई है। इस में आधुनिक बोध से उत्पन्न अकेलापन, रिक्तता की अनुभूती तथा युगीन संक्रमण का तणाव दृष्टीगत होता है।

यौन समस्याओं का चित्रण करनेवाली कहानी

इसमे सामाजिक और महानगरी बोध से ग्रसित टूटे हुए नारी -पुरुष की कहानियाँ है, इनमें हीन भावना, अकेलापन, विवाहेतर सबंध , प्रेम और विवाह के कटू – मधुर सबंध , पती पत्नी के बीच निरसता , नारी -पुरुष संबंधो में तटस्थता का चित्रण हुआ है।

ग्रामीण अंचल की कहानियाँ

इनमे ग्रामीण जीवन की विडंबना, बदलते समय के कारण शहरो की और आकर्षित होती जनता, शासनद्वारा अपेक्षितता, बुनियादी सुविधाओं का अभाव, दि वक्त कि रोटी के लिए किया जानेवाला संघर्ष, रोजगारी का अभाव ग्रामीण अंचल की कहानियो में किस तरह जीवन मूल्य टूटने की कगार पर, आम मनुष्य का जीवन द्विधा मनस्थिती में परीवर्त्तीत होने लगा है। धर्मान्धता को तेजी से इन कहानियो में नकारा गया है।

नई कहानी का कथ्य और शिल्प:

" नई कहानी में समाज, यथार्थ और जीवन मात्र एक वस्तू है, सत्य है और सत्य तभी बनता है जब हमारे सबंधो का आधार बन जाता है। इसलिय उसमे समाज नही, सामाजिक संबंधो और इसके बदलते रूपो का घटनाओ का नही, पुरे परिवेश का व्यक्ती का नही उसकी मनस्थिती का महत्त्व है। नई कहानी सामाजिक संबंधो की सारी प्रकृति उनके व्यापक परवेश और संदर्भ तथा बदलती हुई मनस्थिती की कहानी है।" प्रो धनजंय वर्मा

नई कहानी में सांकेतिकता, बिंब –विधान एवं प्रतिक योजना मिलती है, सांकेतिकता कहानी के अंत में न होकर कहानी के पुरे ढाँचे को इधर- उधर बिधरता है। नई कहानी एक साथ मूल्य भंग और मूल्य निर्माण की कहानी है। इसकी उपलब्धि यह है की यह कोई प्रवृत्ती –विशेष नही है, यह आज की परस्थितीयों से उद्भूत मानवीय वास्तविकता कि समय संवेदना, संचेतना और भावबोध की कहानी है। यह जीवन के विविध ज्ञात अज्ञात क्षेत्रो को स्पर्श करती आगे बढ रही है।

जीवन मूल्य के प्रकार, महत्त्व,आवश्यकता विघटन के प्रकार

साहित्यकार अपने युग का प्रतिनिधी होता है। वह अपने युग सामाजिक,आर्थिक, राजनीतिक परस्थितीयों से प्रभावित होता है। इसलिय रचनाकार की रचना पर युगीन परस्थितीयो की स्पष्ट छाप रहती है। नए कथा साहित्य में अत्याधिक उग्रता और निर्ममता तथा यथार्थ की क्रूरतम प्रवृतियॉ दिखायी देती है। इन नए कथाकारो ने बदलते समय में दिखायी देनेवाला भारत का क्रूर यथार्थ, स्वार्थ –परायणता, भ्रष्टाचार, समाज की विषम भयावहता, विसंगतियाँ, बेकारी, असुरक्षा का वर्णन अपनी रचनाओं मे किया है।

जीवन मूल्य का महत्त्व

मूल्य का महत्त्व यह है कि, जीवन मूल्य में यह क्षमता होती है कि मानवी जीवन के मूल्यवान बना सके। मुल्यों का निर्माण तो मानव के साथ साथ ही हुआ है। मूल्य मानव का अविभाज्य ऐसा घटक है, यदि मूल्य का अंत हो गया तो मानवता भी नष्ट हो जाएगी।

जीवन मूल्य की आवश्यकता

मानव जीवन में तीन मुलभूत मूल्य आवश्यक है। इसका वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता है।

सामाजिक मूल्य- समता, स्वतंत्र्यता, पारिवारिक विवाह

आध्यात्मिक मूल्य- जप,तप,विधीपालन, जातिय संस्कार, आस्तिकता, आनंद, मोक्ष

राजनीतिक मूल्य- राष्ट्रीयता , देशप्रेम , कर्तव्य –परायणता

नए कहानीकारों ने अपनी रचनाओं में टूटते सामाजिक मुल्यो का चित्रण अत्यंत मार्मिकता एवं यथार्थ से किया है। नए कथाकारो ने टूटते हुए हर एक सामाजिक पहलूओं को स्पर्श तो किया है। साथ ही इसमे प्रयुक्त समस्याओं के प्रति पाठक अथवा समाज को सजग अथवा जागरूक करने का महत्वपूर्ण कर्तव्य भी किया है।

राजनीतिक मूल्य विघटन

जिन राजनीतिक मुल्यों को लेकर किसी राष्ट्र ढाँचा तैयार किया जाता है। इसी अनुरूप देश की प्रतिभा निर्मित होती है। राजनीतिक मूल्य में राष्ट्रीयता, देशप्रेम, कर्तव्य परायणता जैसे तत्त्वो का समावेश होता है। यह मानव का सर्वांगीण विकास करने के लिय उपयोगी सिद्ध होते है। स्वतंत्रता पूर्व काल में भारतीयो में भारतभूमी के लिय आदर सन्मान तथा था किंतु स्वातंत्रोत्तर काल में यह निष्ठा कही टूटती गई। वोट की राजनीती ने जातिवाद गुटबंदी को आधार मिला।

आध्यात्मिक मूल्य विघटन

आध्यात्मिक दृष्टीद्वारा प्रतिपादित शाश्वत जीवन मूल्य, भोग, योग, और कर्म है। कर्म कर्तव्य भावना ये युक्त है। भारतीय जीवन में संतोष का स्थान भी बहुत उँचा है, जो मानव निर्लिप्त जीवन का संदेश देता है। आध्यात्मिक मूल्य में विधीपालन, जातिय संस्कार, आस्तिकता, खानपान, श्रद्धा, भक्ती, निषेध, त्याग, संतोष, आनंद, मोक्ष जैसे उच्चतम तत्वो का समावेश होता है। जो मनुष्य को आत्मसाक्षात्कार करा सकते है।

आर्थिक मूल्य विघटन

भारतीय संस्कुती में चार पुरुषार्थो में से एक अर्थ है। इनकी सिद्धी मानव जीवन का लक्ष्य है। यह अर्थ मोक्ष जीवन की साधना भी है। परंतु भारतीय संस्कृति में इसे कभी सर्वोपरी स्थान नही दिया गया। यह साधन नही साध्य कहलाय। परंतु बदलते समय के साथ इसमे तेजी से परिवर्तन आया और मनुष्य को जीवन यापन करना मुश्कील हो गया और मनुष्य बेरोजगारी , भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी करने आदि हो गया। अर्थ प्राप्ति के लिए उसने लाज के हर परदे को तोड दिया।

टूटते जीवन मूल्य के कारण

भूमंडलीकरण के कारण विश्व सिमट गया है। युद्धो, महायुद्धो तथा आतंकवाद ने मूल जीवन मुल्यों को हिलाकार रख दिया। आधुनिक तकनिकी विकास ने मुल्यों को विविधता बढा दी। क्षण को जीने की लालसा में युग जीने की नई दृष्टी एवं दिशा प्राप्त हुई है। साहित्य दृष्टी ही नही अंतर्दृष्टी भी देता है। डॉ. शंभुनाथ सिंह चौहान

जितनी तेजी से औद्यगिक एवं वैज्ञानिक विकास हुआ उसका प्रभाव उतनी ही तेजी से मानवीय जीवन प्रभाव पडा। पश्चिम में आयी औद्योगिक विकास तकनीक और पश्चिमी सभ्यता, संकृति से प्रभावित होता गया। परिणामत:पारिवारिक तथा असामाजिक जीवन में व्यापक परिवर्तन हुआ।

पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण

आज पाश्चात्य संस्कृति ने सारे विश्व को पागल कर दिया है। भारतीय मूल्य तथा पाश्चात्य संस्कृति में अंतर है। पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण की प्रवृत्ति एवं दिशाहीन विवेक की वजह से परंपरागत नैतिक मुल्यों बिखराव आया। पश्चिम से आयातीत सभ्यता और संस्कृति ने युवा वर्ग को सर्वाधिक प्रभावित किया है। नशीले पदार्थो का सेवन , विदेशी वस्तुओं के प्रति तीव्र मोह , परंपरागत नैतिक मुल्यों के प्रति उपेक्षा और स्वच्छंद भौतिक संस्कृति के निर्माण की ललक युवा वर्ग में उत्पन्न हुई। पाश्चात्य संस्कृति ने महिलाओं को स्वावलंबी बनाया जिससे व्यक्तिवादी हो जाने से परिवार टूटने लगे। वैवाहि सबंध भी झुठे पडने लगे।

औद्योगिकरण

औद्योगिकरण के कारण भौतिक मुल्यों को बढावा मिला। औद्योगिक विकास के कारण इससे वैयक्तिक सबंध प्रभावित हुए। मनुष्य का ध्येय केवल भौतिक विकास करने तक समित रह गया। परिणाम स्वरूप पारिवारिक सबंध, प्रेम, सहानुभूती, सहयोग, त्याग का स्थान, अवकाश –हीनता, निरर्थकता, अजनबीपन, घुटन, मृत्युबोध तथा विकृतियों ने पर्याप्त रचनाएँ की गई।

बढती हुई आबादी

चिकित्साशास्त्र के अनेक बढते संशोधन से मनुष्य की आयु बढने लगी। मृत्यू का प्रमाण कम होने से भारत देश के आबादी बढने लगी। गरिबी, भूखमरी का प्रमाण बढने लगा। बालको की परवरिश असंभव होने लगी। आपसी प्रेम भी विभक्त होने लगा। निर्धनता, भूखमरी , बेईमानी, रिश्वतखोरी, चोरी, खून कालाबाजारी का प्रमाण बढने लगा। ऐसी अवस्था में मुल्यों का शाश्वत रहना असंभव था।

नागरीकरण

औद्योगिक विकास ने भारत का मूल रूप ही बदल दिया। महानगर की आधुनिक सुविधाओं की पकड मजबूत होने के कारण शहरों की ओर नई पिढी का आकर्षण बढता चला गया। भीड तथा व्यस्तता के कारण मनुष्य आत्मकेंद्रित हुआ है।

फिल्मी दुनिया का प्रभाव

भारत की नब्बे प्रतिशत जनसंख्या का प्रेरणास्थान फिल्म रहा है।फिल्मी परदे पर दिखाई जानेवाली पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण नई पीढी तेजी से कर रही है। अति बौद्धीकत के कारण फिल्मो का कु-प्रभाव बढता जा रहा है। पार्टी, क्लब, डकैती, प्रेमविवाह, वेशभूषा का अतिरेक विभक्त पारिवारिक संस्था का प्रचलन, युवा वर्ग का विदेशी वस्तुओं ओर बढता आकर्षण, नशिले पदार्थो का बढता सेवन, फॅशन, खून, बलात्कार, अश्लीलता तथा भ्रष्ट राजनीति का भड्कीला चित्रण नैतिक मुल्यों के टूटने का कारण बन रहा है।भारतीय फिल्मी दुनिया भारत की संस्कृति को बिगडने का एकमात्र कारण बना।

निष्कर्ष

स्वातंत्र्योत्तर कालखंड में कहानी साहित्य में लोकप्रिय और गंभीरता का सामंजस्य बिठाना कठीन कार्य है। इन कहानीयों में परिवार की घुटन, टूटनऔर अवमूल्यन पार इन नए रचनाकारों की दृष्टी गई। नई कहानी का यही प्रस्थान बिंदू था, जहाँ खडे होकर कहानी ने अपनी अगली यात्रा की दिशा तय की।

जिस समय देश के भाग्यविधाता संविधान के निर्माण में जुटे हुए थे, उस समय भारतीय जनमानस गंभीर चूनौतियों के दौर से गुजर रहे थे। फलत: मानवीय सबंधो का स्वाभाविक रूप विकृत हो चला, रिश्तो में दरारे पड गयी। पुरातन जीवन मूल्य आधुनिकता से टकराकर नष्ट हो गए या नया चोला धारण करने के लिय बाध्य हो गए। मानव हृदय की चीख पुकार और बदलते परिवेश की विसंगतियों ने नए कहानीकारों को उसका दायित्व बोध करते हुए आधुनिक व्यक्ती के हृदय मस्तिष्क, चेतना और अन्तसचेतना की सूक्ष्म विवेचना का अवसर दिया। स्वतंत्रता के उपरांत स्तरो को यथार्थता से दर्शया है। ये कहानियाँ नए मोड की सूचना देती है, साथ ही नए रचनात्मक परिवेश की ओर संकेत भी करती है। इसप्रकार नए तथ्य नए प्रयोग और नवजीवन मुल्योद्वारा नई कहानी ने कथा साहित्य को नई अर्थवत्ता तथा कला-संचेतना प्रदान की है जो नितांत नई उपलब्धि है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

१. नई कहानी की नवीनत -प्रो धनंजय वर्मा

२. हिंदी कहानी का इतिहास -गोपाल राय

३. व्यक्ती और सृष्टा-डॉ शंभुनाथ सिंह चौहान

४. हिंदी साहित्य की प्रवृतियाँ- जयकिशन प्रसाद खंडेलवाल

५. जीवनमूल्य- श्री. प्र. ग. सहस्त्रबुद्धे